्रे॰ वा॰ ३

साबिनीदेवताभेदेसिन्दूरं नागसंभव।। ६१ = ॥ सिंदूरस्तुवृक्षभेदेसि चूरीर त चेलिका। रोचनाधातकी संदर्यङ्ग नायां दुमा नारे॥ ६१० ॥ खनार सुम्नीसन्यस्पा डेचटकेऽपिच। सेरिधीपर वेश्मस्याशिल्पन्त ाखवश खिया।। ६२०॥ वर्गासङ्कर संभूतस्वीम हिन्न कयारिप। सेवि र्वाजिवास्त्राताजनयार्बर्रीफले॥ ६२१॥ श्री विस्तर्गनाः॥ श्री। स्थादर्गलं नं नहां ने परिघयन साडिन से। वस्रदेवेव साबहाव ग्लःसमद्दिपे ॥ ६२२॥ वक्रेमर्जरसेचाद्यावे सम्बस्यादपह्नवे। अ वेलानुपूर्ग चूर्रोऽच ल स्तुगिरिकीलयोः ॥ ६२३॥ अचलामुखऽञ्जलिस्तु कु उवे कर संपुरे। अंगुलिः कर शाखायां कि शिकायांग जस्य च ॥ ६ २४ ॥ आभी लंभी षर्गेष्ठ छे पिल्वला मत्यदैत्ययोः। इत्वला सार्वाभेदेऽ प्रप ले। या वरत्वयाः ॥ ६२५॥ उपलातृशक्रायामुत्यलंकुष्ठभूर हो। इंदीव रेमांसम्मून्येऽप्युज्वसस्तुविकासिनि॥ ६२६॥ मृगारेविश्देदीप्रेऽप्यना ल स्विरितेकपे। श्रेकान्नटकरले पून्फहन्नः स्वीकर गानरे॥ ६२७ ॥ विवस्य गेना सयो स्वाम संक्षामिम षजे। पङ्गजेस सिनेता सेवम सस्त मृगान्तरे॥ ६२५॥ कमलाश्रीवरनायीःकपिलाविह्निपङ्गयाः। नुकु रेमुनिमेदेवकपिलाशिंशिपानरी॥ ६२७॥ पुंउरीककरिएयां वरेणुकामा विश्षयोः। कपालं कुछक्रभेद घटादि शकलेग्यो। ६३०॥ शिशस्य कि मन्द्र नंतुनवं कुरेकर ध्वना। उपरागमृगभेदेकलापेकंद्र लीड्मे॥ ६३१॥ क